e-ISSN:2582 - 7219

# INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH IN SCIENCE, ENGINEERING AND TECHNOLOGY

Volume 4, Issue 8, August 2021

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 5.928

International Journal Of Multidisciplinary Research In Science, Engineering and Technology (IJMRSET)

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 5.928|

| Volume 4, Issue 8, August 2021 |

|DOI:10.15680/IJMRSET.2021.0408014 |

# मौर्यकालीन राजस्व व्यवस्था की प्रासंगिकता

**डॉ. तौफिक हुसैन**

एसोसिएट प्रोफेसर, विभागाध्यक्ष-इतिहास विभाग
राजकीय कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय
चौमू , राजस्थान

सार

मौर्य राजवंश (322-185 ईसापूर्व) प्राचीन भारत का एक शक्तिशाली राजवंश था। मौर्य राजवंश ने १३७ वर्ष भारत में राज्य किया। इसकी स्थापना का श्रेय चन्द्रगुप्त मौर्य और उसके मन्त्री चाणक्य (कौटिल्य) को दिया जाता है।

यह साम्राज्य पूर्व में मगध राज्य में गंगा नदी के मैदानों (आज का बिहार एवं बंगाल) से शुरु हुआ। चन्द्रगुप्त मौर्य ने ३२२ ईसा पूर्व में इस साम्राज्य की स्थापना की और तेजी से पश्चिम की तरफ़ अपना साम्राज्य का विकास किया। उसने कई छोटे-छोटे क्षेत्रीय राज्यों के आपसी मतभेदों का फायदा उठाया जो सिकन्दर के आक्रमण के बाद पैदा हो गये थे। ३१६ ईसा पूर्व तक मौर्यवंश ने पूरे उत्तरी पश्चिमी भारत पर अधिकार कर लिया था। चक्रवर्ती सम्राट अशोक के राज्य में मौर्यवंश का वृहद स्तर पर विस्तार हुआ। सम्राट अशोक के कारण ही मौर्य साम्राज्य सबसे महान एवं शक्तिशाली बनकर विश्वभर में प्रसिद्ध हुआ।

मौर्य साम्राज्य की राजधानी पाटलिपुत्र (आधुनिक पटना) थी। इसके अतिरिक्त साम्राज्य को प्रशासन के लिए चार और प्रांतों में बांटा गया था। पूर्वी भाग की राजधानी तौसाली थी तो दक्षिणी भाग की सुवर्णगिरि। इसी प्रकार उत्तरी तथा पश्चिमी भाग की राजधानी क्रमशः तक्षशिला तथा उज्जैन (उज्जयिनी) थी। इसके अतिरिक्त समापा, इशिला तथा कौशाम्बी भी महत्वपूर्ण नगर थे। राज्य के प्रांतपालों कुमार होते थे जो स्थानीय प्रांतों के शासक थे। कुमार की मदद के लिए हर प्रांत में एक मंत्रीपरिषद तथा महामात्य होते थे। प्रांत आगे जिलों में बंटे होते थे। प्रत्येक जिला गाँव के समूहों में बंटा होता था। प्रदेशिक जिला प्रशासन का प्रधान होता था। रज्जुक जमीन को मापने का काम करता था। प्रशासन की सबसे छोटी इकाई गाँव थी जिसका प्रधान ग्रामिक कहलाता था।

कौटिल्य ने अर्थशास्त्र में नगरों के प्रशासन के बारे में एक पूरा अध्याय लिखा है। विद्वानों का कहना है कि उस समय पाटलिपुत्र तथा अन्य नगरों का प्रशासन इस सिद्धांत के अनुरूप ही रहा होगा। मेगास्थनीज़ ने पाटलिपुत्र के प्रशासन का वर्णन किया है। उसके अनुसार पाटलिपुत्र नगर का शासन एक नगर परिषद द्वारा किया जाता था जिसमें 30 सदस्य थे। ये तीस सदस्य पाँच-पाँच सदस्यों वाली छः समितियों में बंटे होते थे। प्रत्येक समिति का कुछ निश्चित काम होता था। पहली समिति का काम औद्योगिक तथा कलात्मक उत्पादन से सम्बंधित था। इसका काम वेतन निर्धारित करना तथा मिलावट रोकना भी था। दूसरी समिति पाटलिपुत्र में बाहर से आने वाले लोगों खासकर विदेशियों के मामले देखती थी। तीसरी समिति का ताल्लुक जन्म तथा मृत्यु के पंजीकरण से था। चौथी समिति व्यापार तथा वाणिज्य का विनिमयन करती थी। इसका काम निर्मित माल की बिक्री तथा पण्य पर नज़र रखना था। पाँचवी माल के विनिर्माण पर नजर रखती थी तो छठी का काम कर वसूलना था।

## परिचय

नगर परिषद के द्वारा जनकल्याण के कार्य करने के लिए विभिन्न प्रकार के अधिकारी भी नियुक्त किये जाते थे, जैसे - सड़कों, बाज़ारों, चिकित्सालयों, देवालयों, शिक्षा-संस्थाओं, जलापूर्ति, बंदरगाहों की मरम्मत तथा रखरखाव का काम करना। नगर का प्रमुख अधिकारी नागरक कहलाता था। कौटिल्य ने नगर प्रशासन में कई विभागों का भी उल्लेख किया है जो नगर के कई कार्यकलापों को नियमित करते थे, जैसे - लेखा विभाग, राजस्व विभाग, खान तथा खनिज विभाग, रथ विभाग, सीमा शुल्क और कर विभाग।

मौर्य साम्राज्य के समय एक और बात जो भारत में अभूतपूर्व थी वो थी मौर्यो का गुप्तचर जाल। उस समय पूरे राज्य में गुप्तचरों का जाल बिछा दिया गया था जो राज्य पर किसी बाहरी आक्रमण या आंतरिक विद्रोह की खबर प्रशासन तथा सेना तक पहुँचाते थे।[1]

भारत में सर्वप्रथम मौर्य वंश के शासनकाल में ही राष्ट्रीय राजनीतिक एकता स्थापित हुइ थी। मौर्य प्रशासन में सत्ता का सुदृढ़ केन्द्रीयकरण था परन्तु राजा निरंकुश नहीं होता था। मौर्य काल में गणतन्त्र का ह्रास हुआ और राजतन्त्रात्मक व्यवस्था सुदृढ़ हुई। कौटिल्य ने राज्य सप्तांक सिद्धान्त निर्दिष्ट किया था, जिनके आधार पर मौर्य प्रशासन और उसकी गृह तथा विदेश नीति संचालित होती थी - राजा, अमात्य जनपद, दुर्ग, कोष, सेना और, मित्र।

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 5.928|

| Volume 4, Issue 8, August 2021 |

|DOI:10.15680/IJMRSET.2021.0408014 |

प्रांतीय प्रशासन
मौर्यकाल में प्रशासन में कुशलता के लिए साम्राज्य को आरम्भ में चार प्रान्तों में बांटा गया था, बाद में अशोक के कार्यकाल में प्रान्तों की संख्या पांच हो गयी। यह पांच प्रान्त प्राची, उत्तरापथ, दक्षिणापथ, अवन्ती राष्ट्र और कलिंग थे। उत्तरापथ की राजधानी तक्षशिला, दक्षिणापथ की सुवर्णगिरी, अवन्ती की उज्जयिनी, कलिंग की तोसाली और प्राची की राजधानी पाटलिपुत्र थी।
प्रान्तों पर प्रशासन के लिए कुमार को नियुक्त किया जाता था, यह कुमार राज वंश से सम्बंधित होते थे। प्रातों को आगे और भागों जिले और ग्राम में बांटा जाता था। ग्राम प्रशासन की सबसे छोटी इकाई थी। सौ गावों के समूह को संग्रहण कहा जाता था। सभी प्रशासनिक इकाइयों में प्रशासन के लिए अलग-अलग अधिकारियों की नियुक्ति की जाती थी।[2]

नगर प्रशासन
यूनानी लेखक मेगास्थनीज़ ने अपनी पुस्तक इंडिका में पाटलिपुत्र के नगर प्रशासन के वर्णन किया है। पाटलिपुत्र नगर का प्रशासन 30 सदस्यों के समूह द्वारा किया जाता था। इसकी कुल 6 समितियां होती थीं तथा प्रत्येक समिति के 5 सदस्य होते थे। इस दौरान नगर परिषद् के द्वारा जनकल्याण कार्य जैसे मार्ग निर्माण, चिकित्सालय निर्माण व शिक्षा की व्यवस्था इत्यादि जैसे कार्य किये जाते थे।

न्याय प्रशासन
मौर्यकाल में विभिन्न किस्म के मामलों के लिए अलग-अलग न्यायालयों की व्यवस्था थी। ग्राम न्यायलय सबसे निम्नतर का न्यायालय था। इस न्यायालय में ग्राम का प्रधान व गाँव ने बुजुर्ग लोगों द्वारा न्याय किया जाता था। राजा का न्यायालय मौर्यकाल का सर्वोच्च न्यायालय था।[3]

सैन्य प्रशासन
मौर्यकाल में साम्राज्य के विस्तार का एक प्रमुख कारण उनकी संगठित व सुव्यवस्थित सेना थी। मौर्यकाल में पैदल सेना, घुड़सवार सेना, गज सेना, रथ सेना व नौ सेना प्रमुख थी। यह सेनाएं किसी भी दशा में राज्य की सुरक्षा करने में सक्षम थीं। सैन्य प्रबंध के सर्वोच्च अधिकारी को अंतपाल कहा जाता था। यूनानी लेखक ने अपनी पुस्तक में मौर्यकालीन सेना का वर्णन किया है, मेगास्थनीज़ के अनुसार मौर्य सेना में 6 लाख पैदल सेना, 50 हज़ार घुड़सवार सैनिक, 9 हज़ार हाथी और 800 रथसवार सैनिक थे।[4]

गुप्तचर व्यवस्था
संभवतः मौर्यकाल में सर्वप्रथम गुप्तचरों को इतने बड़े स्तर पर नियुक्त किया गया। राज्य को आंतरिक विद्रोह व बाहरी आक्रमण से बचाने में गुप्तचरों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण थी। यह राज्य की सुरक्षा सम्बन्धी सूचना सेना को देते थे। गौरतलब है कि इस काल में स्त्रियाँ भी यह कार्य करती थीं। मौर्यकाल में संस्था और संचरा नामक दो गुप्तचर संस्थाएं अस्तित्व में थीं।

राजस्व प्रशासन
मौर्य में पण नामक मुद्रा प्रचलन में थी। कर्मचारियों को इसी मुद्रा में वेतन दिया जाता था। मौर्य साम्राज्य में आय का मुख्य स्त्रोत कृषि तथा अन्य भूमि करों से प्राप्त होने वाला राजस्व था। मौर्यकाल में दुर्ग, राष्ट्र, सेतु, व्रज, सीता, प्रणय, हिरनी, कुछ गाँव द्वारा इकट्ठे दिया जाना वाला कर, वर्तनी तथा पिन्द्कर राजस्व के प्रमुख स्त्रोत थे। कृषि योग्य भूमि पर कुल उत्पादन का एक चौथाई या छठा भाग भू-राजस्व या लगान के रूप में वसूल किया जाता था। कई क्षेत्रों में राज्य द्वारा सिंचाई की सुविधा उपलब्ध करवाई जाती थी, ऐसे क्षेत्रों से 1/3 कर लिया जाता था।[5]

पाटलिपुत्र के नगर का प्रशासन 30 सदस्यों का एक मण्डल करता था। इसकी कुल 6 समितियां थी प्रत्येक समिति में 5 सदस्य होते थे।

1-शिल्प कला समिति--इसका प्रमुख कार्य नगर की सड़कों एवं भवनों का निर्माण करना तथा नगर की सफाई व्यवस्था करना था।

2-विदेश समिति--इसका मुख्य कार्य विदेशियों की देख-रेख तथा अप्रत्यक्ष रूप से उनकी गतिविधियों पर नजर रखना था।

3-जनसंख्या समिति--यह समिति जन्म-मरण का विवरण रखती थी।
4-उद्योग व्यापार समिति--इसका कार्य वाणिज्य एवं व्यापार की देखभाल, वस्तुओं के मूल्यों का निर्धारण आदि करना था।

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 5.928|

| Volume 4, Issue 8, August 2021 |

|DOI:10.15680/IJMRSET.2021.0408014 |

5-वस्तु निरीक्षक समिति--बाजार में बिकने वाली वस्तुओं में मिलावट का निरीक्षण करती थी।

6-कर निरीक्षक समिति--बिक्री कर को वसूलना एवं कर चोरी को रोकना। कर चोरी करने वाले को मृत्युदण्ड दिया जाता था।[6]

अवलोकन

विशाल सेना के रख-रखाव हेतु 6 समितियों का गठन किया गया था, प्रत्येक समिति में 5 सदस्य होते थे।
प्रथम समिति--जल सेना की व्यवस्था
द्वितीय समिति--यातायात एवं रसद की व्यवस्था
तृतीय समिति--पैदल सैनिकों की देख-रेख
चतुर्थ समिति--अश्वारोही सेना की देख-रेख
पंचम समिति--गज सेना की व्यवस्था
छठी समिति--रथ सेना की देख रेख
चाणक्य ने पैदल सेना के 6 भागों का उल्लेख किया है--
1-मौल (स्थाई सेना),
2-भृतक (आवश्यकता पड़ने पर किराये की सेना),
3-श्रेणी बल (युद्ध में आजीविका चलाने वाले),
4-मित्र बल (मित्र राष्ट्र की सेना),
5-अमित्र बल (बन्दी बनाये गये सैनिक),
6-आटवी बल (जंगली सेना)
मौर्यों के काल में युद्धों में व्यूह रचना की जाती थी। मुख्य रूप से तीन व्यूहों का प्रयोग किया जाता था--भोग व्यूह, मण्डल व्यूह, असंहत व्यूह।
तीन प्रकार के युद्धों का वर्णन है-

१-प्रकाश युद्ध--जो युद्ध आमने-सामने लड़ा जाये।[7]

२-तूष्णी युद्ध--इस युद्ध में दूसरे राज्यों के राजपरिवार में फूट डलवाकर राज्य का विनास करवा दिया जाता था। फुट डलवाने वाले "तूष्ण" कहलाते थे।

३-कूट युद्ध--कूटनीतिक युद्ध।

विचार – विमर्श

मौर्य काल में गुप्तचरों का महत्वपूर्ण स्थान था। इन्हें "गूढ़ पुरुष" कहा जाता था। गुप्तचर विभाग का प्रधान अधिकारी सर्पमहामात्य कहलाता था। मौर्य शासन में दो तरह के गुप्तचर कार्य करते थे।

1-संस्था--ये गुप्तचर संस्थाओं में संगठित होकर एक ही स्थान पर रुककर कार्य करते थे। ये 5 प्रकार के थे--कापटिक (छात्र वेश), उदास्थित (सन्यासी वेश), गृहपतिक (किसान वेश), वैदेहक (व्यापारी वेश), तापस (तपस्वी वेश)

2-संचार--ये गुप्तचर एक स्थान से दूसरे स्थान पर भ्रमण करते हुए कार्य करते थे। कुछ ऐसे भी गुप्तचर होते थे जो अन्य देशों में नौकरी कर लेते थे और सूचनाएं भेजते थे। ऐसे गुप्तचरों को "उभयवेतन" कहा जाता था। गुप्तचरों के अतिरिक्त शान्ति व्यवस्था बनाने रखने तथा अपराधों की रोकथाम के लिए पुलिस भी होती थी जिसे रक्षिन कहा जाता था।[8]

मौर्य काल में मुख्यतया आठ प्रकार के विवाह प्रचलित थे:-ब्रह्म आर्ष, प्रजापत्य, गंधर्व, असुर, राक्षस और पैशाच

परंतु विवाह वही उत्तम माना जाता था जो माता-पिता की सहमति से किया जाता था।पुरुषों में बहु विवाह की भी प्रथा प्रचलित थी। मेगस्थनीज के अनुसार कुछ स्त्रियां आनंद के लिए और कुछ संतान के लिए ब्याही जाती थी।जनसाधारण में सामान्यतया एक पति या पत्नी विवाह प्रचलित था।
स्त्री और पुरुष दोनों पुनर्विवाह कर सकते थी यदि स्त्री पति का कहना ना मानने वाली, कलह प्रिय, संबंधियों का अनादर करने वाली और संतान उत्पन्न करने में असमर्थ हो तो फिर पुरुष को दूसरा विवाह करने का अधिकार था। पुरुष यदि 10 वर्षों से अधिक

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 5.928|

| Volume 4, Issue 8, August 2021 |

|DOI:10.15680/IJMRSET.2021.0408014 |

समय से परदेस में रह रहा हो और उसकी कोई सूचना ना मिले तो स्त्री अपने अभिभावक से पूछ कर पुनर्विवाह कर सकती थी पुरुष की मृत्यु हो गई हो अथवा वह नपुंसक हो तो भी स्त्री को दूसरा विवाह करने का अधिकार था।इसके अतिरिक्त पुत्र प्राप्ति के लिए समाज में नियोग प्रथा भी प्रचलित थी।समाज में विवाह विच्छेद भी हो सकता था कौटिल्य ने अर्थशास्त्र में इसे मोक्ष कहा है।समाज में स्त्रियों का महत्वपूर्ण स्थान था स्त्रियों का सम्मान माता, पत्नी और पुत्री के रूप में होता था ।यद्यपि पति परिवारिक संपत्ति का मालिक होता था परंतु स्त्री गृह स्वामिनी होकर उन सभी संपत्तियों का उपभोग करती थी।स्त्रियों को भी अपने पति के अत्याचार से मुक्ति के लिए न्यायालय में जाने का अधिकार था और वह इसके लिए न्याय मांग सकती थी इससे अनुमान लगाया जा सकता है की स्त्रियों को अपने मामले में काफी स्वतंत्रता थी।[9]

सामान्यतः स्त्रियां घर पर ही रहती थी । मौर्य काल में अंशत: पर्दा प्रथा भी प्रचलित थी केवल परिव्राजिका (सन्यासिनी) घर के बाहर स्वच्छंद रूप से विचरण करती थी।मौर्य कालीन समाज में वेश्यावृत्ति का प्रचलन था वेश्याओं को रूप जीवा कहा जाता था। वेश्याओं के लिए भी विभिन्न नियमों का प्रतिपादन किया गया है वैश्यालय की मुखिया महिला होती थी जिसे मातृका कहा जाता था।प्रत्येक वैश्या अपनी मासिक आमदनी में से दो दिन का भाग राजा को कर के रूप में अदा करती थी।समाज में शासन के द्वारा व्यभिचार पर नियंत्रण करने की व्यवस्था की गई थी। अर्थशास्त्र के अनुसार यदि कोई व्यक्ति अपने घर में वैश्यालय खोलता है या व्यभिचार के द्वारा घर में कमाई करता है तो उस स्त्री को वैश्यालय में ले जाकर मातृका के सुपुर्द कर देना चाहिए तथा उस व्यक्ति को कठोर दंड दिया जाना चाहिए।[10]

## अधिक स्पष्टीकरण

मौर्य युगीन समाज धर्म के नवीन प्रयोगों से आंदोलित हो रहा था। प्राचीन वैदिक धर्म जिसके अनुयाई अधिकांश मात्रा में थे ,ब्राह्मण धर्म कहा जाता है इसके अलावा वैदिक धर्म की प्रतिक्रिया स्वरूप जैन और बौद्ध धर्म उदित होने के पश्चात अपनी जड़ें तेजी से जमा रहे थे। वैदिक धर्म में यज्ञ करना प्रमुख कार्य था इसके अलावा यज्ञ में पशु बलि दी जाने लगी थी। वैदिक धर्म के साथ ही शैव, वैष्णव धर्म भी समाज में प्रचलित थे जिनमें शिव ,वासुदेव और संकर्षण की पूजा होती थी।बौद्ध धर्म में भी अनेक मतभेद हो गए थे इन मतभेदों को दूर करने के लिए सम्राट अशोक ने पाटलिपुत्र में तीसरी बौद्ध संगति का आयोजन किया था।समाज में धार्मिक रूढ़ियां बढ़ती जा रही थी जिसकी ओर सम्राट अशोक ने अपने नवम शिलालेख में ध्यान आकर्षित किया है ।आचार्य चाणक्य ने जटिलों, मुंडो और पाखंडी लोगों पर प्रतिबंध लगा दिया था।मौर्य शासकों ने सभी धर्मों को समान आदर दिया और सभी पूजा पद्धतियों का समर्थन किया चंद्रगुप्त मौर्य प्रारंभ में वैदिक धर्मावलंबी था बाद में जैन हुआ इसी प्रकार सम्राट अशोक प्रारंभ में शिव का उपासक था बाद में उसने बौद्ध धर्म स्वीकार कर लिया।अशोक ने अपने अभिलेख में धार्मिक समता पर बल दिया है।[11]

आर्थिक जीवन:-

भाग्यवश उस युग में भारतवर्ष को आचार्य चाणक्य के रूप में एक महान अर्थशास्त्री प्राप्त हुआ जिसने मौर्य शासन व्यवस्था को चारों तरफ से सुदृढ़ कर दिया। अर्थशास्त्र ग्रंथ और मेगस्थनीज की इंडिका में कृषि पशुपालन एवं उद्योग धंधों के विषय में काफी प्रकाश डाला गया है।

खेती व पशु पालन:-

कौटिल्य ने अपनी पुस्तक अर्थशास्त्र में कृषि के विभिन्न साधन और भूमि के विभिन्न प्रकारों का उल्लेख किया है तथा किस प्रकार से किस फसल को कब बोना चाहिए इन सारी बातों का स्पष्ट उल्लेख किया गया है। अर्थशास्त्र में गेहूं ,चावल,जौ , सांवा ,कोदौ ,चना ,गन्ना, सरसों, मटर आदि विभिन्न फसलों का उल्लेख है।पशुपालन में गाय, भेड़ ,बकरी ,घोड़ा, मुर्गी पाले जाते थे गायों को मारने पर दंड का विधान था । गायों की देखभाल के लिए ग्वाले नियुक्त थे और उनके चरने हेतु चारागाह बनाए गए थे।[12]

उद्योग धंधे:-

मौर्य युगीन भारत व्यापारिक दृष्टि से अत्यंत उन्नत अवस्था में था विभिन्न वस्तुओं का उत्पादन होता था साथ ही साथ आयात और निर्यात पर्याप्त मात्रा में होता था अर्थशास्त्र में उद्योग विभाग के विभिन्न अधिकारियों का वर्णन किया है जिनमें से सूत्र विभाग ( सूत

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 5.928|

| Volume 4, Issue 8, August 2021 |

|DOI:10.15680/IJMRSET.2021.0408014 |

काटने का विभाग) के अधिकारी को सूत्राध्यक्ष ,कृषि विभाग के अधिकारी को सीताध्यक्ष, समुद्र या नदी तट की देखभाल करने वाले अधिकारी को तटाध्यक्ष और नावों की व्यवस्था करने वाले अधिकारी को नवाध्यक्ष कहा जाता था।

काशी ,बंगाल, मालवा सूती वस्त्रों के लिए प्रसिद्ध थे। इसके अतिरिक्त विभिन्न प्रकार के रेशम का उत्पादन होता था तथा रेशम चीन से भी मंगाया जाता था इसे चीनपट्ट कहा जाता था।भारतीय सोने, चांदी, तांबा, लोहा ,सीसा, ज़िंक आदि से परिचित थे इन्हें खानों से निकाला जाता था।मौर्यकालीन राजाओं ने शासन को सुदृढ़ सुरक्षित बना दिया था । विस्तृत साम्राज्य के लिए मार्गों का निर्माण कराया गया था। सबसे लंबा राजमार्ग तक्षशिला से पाटलिपुत्र तक था। चंद्रगुप्त मौर्य की सेल्यूकस पर विजय होने से कंधार,काबुल के प्रांत भारत को मिल गए थे तथा यूनानी राजाओं की भारतीय राजाओं से मित्रता हो गई थी। चंद्रगुप्त मौर्य के दरबार में मेगस्थनीज दूत था और सम्राट अशोक के दरबार में सीरिया के राजा एंतियोकस ने अपना दूत भेजा था। व्यापारियों के लिए भी सुविधा हुई और भारत से लेकर ईरान, इराक होते हुए युरोप तक स्थल मार्ग से व्यापार सुगमता से होने लगा।भारत का व्यापार जलमार्ग से भी होता था और यह उन्नत अवस्था में था। अर्थशास्त्र ग्रंथ में छोटी से लेकर बड़ी नौकाओं का वर्णन किया गया है साथ ही नदी और समुद्र दोनों जल मार्गों का वर्णन है।[13]

साहित्य और कला:-

मौर्य काल में वैदिक ,बौद्ध और जैन धर्म के विभिन्न धर्म ग्रंथों को लिखा गया। वैदिक ग्रंथों में वेदांग ,धर्मसूत्र आदि की रचना की गई तथा भास के नाटकों को भी रचा गया। पाणिनि की अष्टाध्यायी को भी इसी युग का माना जाता है। इस युग का राजनीति पर लिखा गया विश्व प्रसिद्ध महत्वपूर्ण ग्रंथ कौटिल्य कृत अर्थशास्त्र है।

इसी काल में सम्राट अशोक ने मोगलीपुत्त तिस्स की अध्यक्षता में तीसरी बौद्ध संगति का आयोजन पाटलिपुत्र में किया था । जिन्होंने धम्म पिटक, विनय पिटक के साथ एक अन्य ग्रन्थ कथावत्थु की रचना की जो विस्तृत होकर अभिधम्म पिटक बना।जैन धर्म के संत स्वयंभू ने दर्श वैकालिक नामक ग्रंथ लिखा ।आचार्य भद्रबाहु ने जैन ग्रंथों पर भाष्य लिखा।इस समय तक्षशिला विश्वविद्यालय भारत ही नहीं वरन संपूर्ण विश्व में ज्ञान और संस्कृति का पाठ पढ़ाता था। इसके अलावा मौर्यों की राजधानी पाटलिपुत्र विद्या का एक प्रमुख केंद्र था ,काशी धर्म ग्रंथों की शिक्षा के लिए और अन्य ग्रंथों की शिक्षा के लिए भी महत्वपूर्ण केंद्र था।

मौर्य शासकों ने सुंदर-सुंदर भवनों का निर्माण कराया था । जिनके विषय में फाह्यान नामक चीनी यात्री का विवरण महत्वपूर्ण है जिसने बताया था सम्राट अशोक के बनवाए भवनों को देखकर वह चकित हो गया है और शायद देवों ने उसकी रचना की है। क्योंकि पत्थरों को इकट्ठा किया गया, दीवारों ,तोरण द्वार को चिना गया और अद्भुत नक्काशी की गई है ऐसा कार्य संसार के मनुष्य के बस की बात नहीं है।कुम्हरार के उत्खनन से मौर्य राज प्रसाद के अवशेष प्राप्त है जो अति सुंदर हैं।[14]

सम्राट अशोक ने हजारों की संख्या में स्तूपों , चैत्य (चिता पर स्थापित{सामूहिक पूजा का स्थान}),विहार (भिक्षुओं के रहने का स्थान) और स्तंभों का निर्माण कराया था। जिसमें से भरहुत(इलाहाबाद से153 किलोमीटर दूर) और सांची के स्तूप(मध्यप्रदेश के भोपाल के पास) विशेष प्रसिद्ध है ।स्तूप की संरचना इस प्रकार है कि इनका व्यास नीचे अधिक होता है ये ऊपर की ओर बढ़ते जाते हैं जहां इनका व्यास कम होता जाता है और यह अर्ध गोलाकार होते हैं तथा ईंट और पत्थर के बनाए जाते हैं।

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 5.928|

| Volume 4, Issue 8, August 2021 |

|DOI:10.15680/IJMRSET.2021.0408014 |

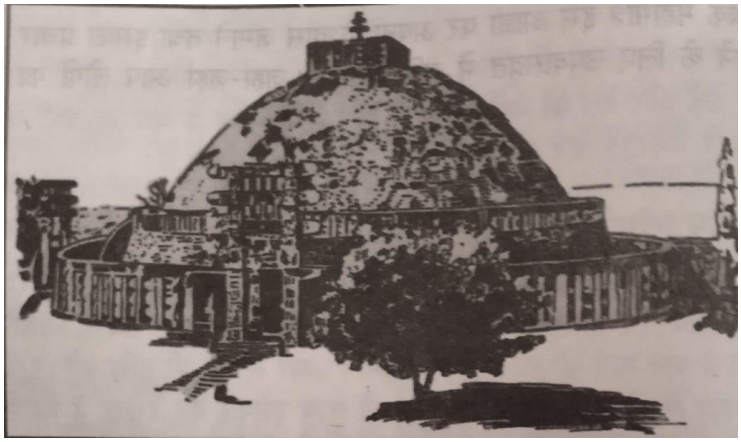

भोपाल स्थित साँची का स्तूप

अशोक ने स्तंभ का निर्माण कराया और स्तंभों पर अपना लेख लिखवाया यह स्थापत्य कला के शानदार नमूने हैं। इनकी संख्या 30 से अधिक है ।यह स्तंभ एक ही पत्थर के टुकड़े को काटकर बनाए जाते हैं एक स्तंभ का वजन लगभग 50 टन है इसकी ऊंचाई 15 से मीटर तक होती है नीचे की ओर मोटे और ऊपर की ओर पतले होते जाते हैं। प्रत्येक स्तंभ के शीर्ष पर उल्टे कमल के आकार का शिखर है और उस पर कोई न कोई पशु आकृति बनी है जिनमें सिंह, हाथी ,घोड़ा और बैल की सुंदर मूर्तियां हैं । स्तंभ के मध्य भाग में चक्र,पशु आदि की कलाकृतियां बनी हैं। सारनाथ में बना हुआ अशोक स्तंभ जिस पर सिंह की मूर्ति स्थापित है इन सिंहों की संख्या चार हैं ये चारों दिशाओं में मुंह करके खड़े हैं । इसे भारत का राष्ट्रीय चिन्ह स्वीकार किया गया है।[15]

सारनाथ स्थित अशोक स्तम्भ

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 5.928|

| Volume 4, Issue 8, August 2021 |

|DOI:10.15680/IJMRSET.2021.0408014 |

रामपुरवा स्थित वृषभ शीर्ष का अशोक स्तम्भ

अशोक ने गुफाओं का भी निर्माण कराया उनकी दीवारें पर उच्च कोटि की पॉलिश की गई है जिससे वे शीशे की तरह चमकदार प्रतीत होती हैं।इस प्रकार से मौर्ययुग की स्थापत्य कला अत्यंत उन्नत अवस्था में थी इन्हें विश्व की भवन निर्माण कला में अत्यंत उन्नत स्थान प्रदान किया जा सकता है।

सारनाथ का मूर्ति शिल्प और स्थापत्य मौर्य कला का एक अतिश्रेष्ठ नमूना है। विनसेन्ट स्मिथ नामक प्रसिद्ध इतिहासकार के अनुसार, किसी भी देश के पौराणिक संग्रहालय में, सारनाथ के समान उच्च श्रेष्ठ और प्रशंसनीय कला के दर्शन दुर्लभ हैं क्योंकि इनका काल और शिल्प कड़ी छनबीन के बाद प्रमाणित किया गया है। मौर्य काल के दौरान मथुरा कला का एक दूसरा महत्त्वपूर्ण केन्द्र था। शुंग-शातवाहन काल के काल में इस राजवंश की प्रेरणा से कला का अत्यंत विकास हुआ। बड़ी संख्या में इमारतें बनी, अन्य पौराणिक कलाएँ विकसित हुईं जो सारनाथ की पिछली पीढियों के विकास को दरशाती हैं। इस युग की मजबूत जड़ अर्ध वृत्तीय मन्दिर वाली उसी पीढ़ी की नींव पर टिकी है। कला क्षेत्र में विख्यात भारत-सांची विद्यालय मथुरा का एक अनमोल केन्द्र कहा जाता है। जिसकी अनेक छवियां इन विद्यालयों में आज भी देखने को मिलती हैं।[16]

मौर्य कलाकृतियों के नमूने

## परिणाम और निष्कर्ष

कलिंग युद्ध के नरसंहार के पश्चात् अशोक ने युद्ध की नीति त्याग कर 'धम्म' की नीति अपनाई। धम्म संस्कृत शब्द 'धर्म' का प्राकृत रूप है। यह कोई विशेष धार्मिक आस्था, व्यवहार या मनमाने ढंग से निर्मित की गई शासकीय नीति नहीं थी, बल्कि यह सामाजिक व्यवहार एवं गतिविधियों के सामान्यीकृत मानदंड थे। एक तरह से प्रजा के नैतिक उत्थान एवं सामाजिक व्यवस्था को सुचारु रूप से चलाने के लिये अशोक द्वारा बनाए गए 'नैतिक नियम' ही धम्म की नीति थी।अशोक के धम्म में किसी देवता की पूजा अथवा किसी

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 5.928|

| Volume 4, Issue 8, August 2021 |

|DOI:10.15680/IJMRSET.2021.0408014 |

कर्मकांड की आवश्यकता नहीं थी। अशोक ने अपना कर्त्तव्य समझकर अपनी प्रजा को पिता की तरह अच्छे व्यवहार का निर्देश दिया।नारी सहित समाज के विभिन्न वर्गों के बीच 'धम्म' के संदेश को प्रचारित करने के लिये उसने 'धम्म समाज' नामक अधिकारियों की नियुक्ति की।अशोक ने धम्म के प्रचार के लिये स्तंभों और शिलाओं पर संदेशों को उत्कीर्ण करवाया। साथ ही जो लोग पढ़ने में सक्षम नहीं थे, उनके लिये ये अभिलेख पढ़कर सुनाने का आदेश भी अपने अधिकारियों को दिया।विदेशों, जैसे- मध्य एशिया और श्रीलंका में भी अशोक ने धम्म के प्रचार के लिये अपने दूत भेजे।अशोक के धम्म का उपदेश था कि लोग माता-पिता की आज्ञा माने, ब्राह्मणों और बौद्ध भिक्षुओं का आदर करें और दासों व सेवकों के प्रति दया करें।अभिलेखों के माध्यम से धम्म के प्रचार के लिये अशोक ने अधिकतर ब्राह्मी लिपि में अभिलेखों का निर्माण करवाया। फिर भी अशोक के अभिलेखों की भाषा उनकी भौगोलिक स्थिति पर निर्भर करती है, जैसे- उत्तर-पश्चिमी भारतीय उपमहाद्वीप में खरोष्ठी और आरमाहक लिपि में भी कुछ अभिलेख मिले हैं।[17]

अशोक ने धम्म के माध्यम से शांतिवादी नीति अपनाई और कहा जाता है कि इस शांति की नीति ने मौर्य साम्राज्य को पतन की ओर धकेल दिया।[19] यह बात पूर्णतया सही नहीं है, क्योंकि धम्म के माध्यम से अशोक ने अपने साम्राज्य के भीतर और विदेश में महत्त्वपूर्ण सफलता पाई।साम्राज्य के सुदूर भागों, जैसे- मध्य एशिया, यूनान और श्रीलंका में अपने धर्म प्रचारक भेजकर अशोक ने सांस्कृतिक विजय की नीति अपनाई। प्रबुद्ध शासक के तौर पर अशोक ने प्रचार के माध्यम से राजनैतिक प्रभाव क्षेत्र में वृद्धि की।धम्म के प्रचार से अशोक ने अपने साम्राज्य के भीतर विभिन्न धार्मिक वर्गों के मध्य समन्वय एवं सामाजिक व्यवस्था को सुचारू रूप से चलाने का प्रयास किया।धम्म के माध्यम से अशोक ने देश में राजनीतिक एकता स्थापित की। उसने एक धर्म, एक भाषा और एक लिपि से देश को एक सूत्र में बाँध दिया।साम्राज्य से बाहर धर्म प्रचारक अधिकारियों की नियुक्ति से प्रशासन के क्षेत्र में लाभ हुआ और साथ ही विकसित गंगा के मैदान और दूरवर्ती क्षेत्रों के मध्य सांस्कृतिक संपर्क में वृद्धि हुई।इस प्रकार मौर्य साम्राज्य के पतन के लिये अशोक की धम्म की नीति को ज़िम्मेदार ठहराना उचित नहीं है। मौर्य साम्राज्य के पतन के लिये अन्य कई कारण मौजूद थे, जैसे-अशोक द्वारा पशु-पक्षियों के वध तथा स्त्रियों में प्रचलित कर्मकांडीय अनुष्ठान को निषिद्ध करने पर ब्राह्मणों की प्रतिक्रिया एवं उनमें जन्मी विद्वेष की भावना।[18]

सेना और प्रशासनिक अधिकारियों पर होने वाले भारी खर्च के बोझ से मौर्य साम्राज्य के सामने खड़ा होने वाला वित्तीय संकट।प्रांतों में दमनकारी शासन भी साम्राज्य के टूटने का महत्त्वपूर्ण कारण था। बिंदुसार के शासन में तक्षशिला के नागरिकों ने दुष्ट अधिकारियों के कुशासन की कड़ी शिकायतें की थी। अशोक के कलिंग अभिलेख से प्रकट होता है कि प्रांतों में हो रहे अत्याचारों से वह बड़ा चिंचित था।अशोक द्वारा पश्चिमोत्तर सीमा दर्रे की सुरक्षा पर ध्यान नहीं देना। चीन की महादीवार जैसा अशोक ने कोई उपाय नहीं किया, जिससे साम्राज्य को पार्थियनों, शकों और यूनानियों से खतरा पैदा हुआ।[20]

## संदर्भ

1. एलेन डेनिएलौ (2003)। भारत का एक संक्षिप्त इतिहास । साइमन और शूस्टर। आईएसबीएन 978-1-59477-794-3.
2. आर्थर लेवेलिन बाशम (1951)। जीविकों का इतिहास और सिद्धांत: एक लुप्त भारतीय धर्म । एलडी बार्नेट द्वारा प्राक्कथन (1 संस्करण)। लंदन : लुज़ैक.
3. बर्टन स्टीन (1998)। ए हिस्ट्री ऑफ इंडिया (पहला संस्करण), ऑक्सफोर्ड: विले-ब्लैकवेल।
4. जेफ्री सैमुअल (2010)। योग और तंत्र की उत्पत्ति। तेरहवीं शताब्दी के लिए भारतीय धर्म । कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।
5. एचसी रायचौधुरी (1988) [1967]। "नंदों के युग में भारत" । में KA Nilakanta शास्त्री (सं।)। नंदों और मौर्यों की आयु (द्वितीय संस्करण)। दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास. आईएसबीएन 978-81-208-0466-1.
6. एचसी रायचौधुरी ; बीएन मुखर्जी (1996)। प्राचीन भारत का राजनीतिक इतिहास: परीक्षित के प्रवेश से गुप्त राजवंश के विलुप्त होने तक । ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस ।
7. हरमन कुल्के; डाइटमार रॉदरमुंड (2004)। ए हिस्ट्री ऑफ इंडिया (चौथा संस्करण)। लंदन : रूटलेज . आईएसबीएन 0-415-15481-2.
8. इरफान हबीब; विवेकानंद झा (२००४)। मौर्य भारत . ए पीपल्स हिस्ट्री ऑफ इंडिया। अलीगढ़ हिस्टोरियंस सोसाइटी / तूलिका बुक्स । आईएसबीएन 978-81-85229-92-8.
9. जेई श्वार्ट्जबर्ग (1992)। दक्षिण एशिया का एक ऐतिहासिक एटलस । ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय प्रेस।
10. जॉन के (2000)। भारत, एक इतिहास । न्यूयॉर्क: हार्पर कॉलिन्स पब्लिशर्स।
11. जॉन कोर्ट (2010)। फ्रेमिंग द जीना: नैरेटिव्स ऑफ आइकॉन्स एंड आइडल्स इन जैन हिस्ट्री । ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस । आईएसबीएन 978-0-19-538502-1.

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 5.928|

| Volume 4, Issue 8, August 2021 |

|DOI:10.15680/IJMRSET.2021.0408014 |

12. जॉन डी ग्रिंगर (2014)। सेल्यूकोस निकेटर (रूटलेज रिवाइवल): हेलेनिस्टिक किंगडम का निर्माण। टेलर और फ्रांसिस। आईएसबीएन 978-1-317-80098-9.
13. कैलाश चंद जैन (1991)। भगवान महावीर और उनका समय । मोतीलाल बनारसीदास । आईएसबीएन 978-81-208-0805-8.
14. पॉल जे। कोस्मिन (2014)। हाथी राजाओं की भूमि: सेल्यूसिड साम्राज्य में अंतरिक्ष, क्षेत्र और विचारधारा । हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस । आईएसबीएन 978-0-674-72882-0.
15. आरके मुखर्जी (1966)। चंद्रगुप्त मौर्य और हिज टाइम्स । मोतीलाल बनारसीदास। आईएसबीएन 978-81-208-0405-0.
16. आरसी मजूमदार (2003) [1952]। प्राचीन भारत । मोतीलाल बनारसीदास । आईएसबीएन 81-208-0436-8.
17. रोमिला थापर (2004) [पहली बार पेंगुइन द्वारा 2002 में प्रकाशित]। अर्ली इंडिया: फ्रॉम द ओरिजिन्स टू एडी 1300 । कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय प्रेस। आईएसबीएन 978-0-520-24225-8.
18. एसएन सेन (1999)। प्राचीन भारतीय इतिहास और सभ्यता । न्यू एज इंटरनेशनल। आईएसबीएन 978-81-224-1198-0.
19. उपिंदर सिंह (2008)। प्राचीन और प्रारंभिक मध्यकालीन भारत का इतिहास: पाषाण युग से 12वीं शताब्दी तक । पियर्सन। आईएसबीएन 978-81-317-1677-9.
20. थापर, रोमिला (2013), द पास्ट बिफोर अस , हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस , आईएसबीएन 978-0-674-72651-2

INNO SPACE
SJIF Scientific Journal Impact Factor
Impact Factor: 5.928

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

निस्केयर NISCAIR

# INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH

## IN SCIENCE, ENGINEERING AND TECHNOLOGY

9710 583 466 9710 583 466 ijmrset@gmail.com

www.ijmrset.com